जब मसीहियत बटुए पर प्रहार करती है
(19:10, 20-41; 20:1)

एक प्रचारक मण्डली को प्रेरणा देने की कोशिश कर रहा था। उसने कहा, ''भाइयो, जब से यह कलीसिया आरम्भ हुई है, इसने बहुत लम्बी यात्रा तय की है। आरम्भ में, हम केवल रेंग ही सकते थे, परन्तु अब हम चल सकते हैं।'' बिल्डिंग के पीछे से एक आवाज़ आई, ''इसे चलने दो, भाई; इसे चलने दो!'' प्रचारक को जोश आ गया। ''यदि हम अपने आपको समर्पित कर दें, तो मेरा विश्वास है कि हम भाग सकते हैं!'' आवाज़ आई, ''इसे भागने दो, भाई; इसे भागने दो!'' प्रचारक को और जोश आ गया। ''मेरा यहां तक विश्वास है कि हम ठान लें तो हम प्रभु के लिए उड़ सकते हैं! निश्चय ही इसका अर्थ यह होगा कि हम चन्दा देना दोगुना कर दें!'' पीछे से आवाज़ आई, ''इसे चलने दो, भाई; इसे चलने दो।''

कहते हैं कि बटुआ मनुष्य का सबसे अधिक संवेदनशील भाग है। वर्षों से मैंने किसी को यह कहते हुए नहीं सुना, ''मैं बहुत परेशान हो गया! मैं किसी को आराधना में लाया था, और प्रचारक ने सुसमाचार [या कलीसिया, या प्रेम, या बपतिस्मे] पर संदेश दे दिया!'' परन्तु मैंने कुछ लोगों को यह शिकायत करते सुना है, ''मैं अपने मित्र को अपने साथ लेकर आ तो गया पर पता है? प्रचारक ने *चन्दे* पर संदेश दे दिया । इतना परेशान मैं ज़िंदगी में कभी नहीं हुआ था!''

बटुए पर प्रहार होने से केवल कलीसिया के सदस्य ही नहीं हिचकिचाते हैं। इस पाठ में, हम देखेंगे कि मसीहियत द्वारा कुछ मूर्तिपूजकों के धन के थैलों को हल्का करने पर उनकी प्रतिक्रिया क्या थी। प्रभु की सेवा के लिए अपने उद्देश्यों के बारे में भी हम अपने अन्दर झांकेंगे। परन्तु, आरम्भ करने से पहले, हम इफिसुस में पौलुस के काम को समेट लें।

खुले द्वार एवं विरोध करने वाले (19:10, 20-22)

प्रेरितों 19 में इफिसुस में किए गए पौलुस के कार्य की केवल मुख्य बातें ही बताई गई हैं। हमें उसके वहां तीन वर्ष तक रहने के समय मिली विजयों तथा कठिनाइयों के बारे में और गहरी बातों का पता दूसरे हवालों से ही चलता है। इफिसुस में रहते हुए

उसने लिखा, ''क्योंकि मेरे लिए एक बड़ा द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं'' (1 कुरिन्थियों 16:9)।

पवित्र शास्त्र में ''द्वार खुला'' शब्द को अवसर के लिए, विशेषकर सुसमाचार प्रचार के अवसरों के लिए इस्तेमाल किया गया है (2 कुरिन्थियों 2:12; कुलुस्सियों 4:3)। पौलुस ने प्रचार करने के अवसरों के द्वार पर (अर्थात अवसर मिलने पर) चहलकदमी नहीं की; वह इसमें से निकल गया। अन्ततः इफिसुस से उसके प्रस्थान करने तक वहां पर एक दृढ़ मण्डली थी जिसमें दशकों तक उसकी शक्ति बने रहने वाले प्राचीन थे (प्रेरितों 20:17)। फिर, पौलुस और उसके सहकर्मियों के प्रयासों से, ''आसिया के रहने वाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया'' (आयत 10ख)। तीन वर्ष से भी कम समय में, उन्होंने दस या इससे अधिक मण्डलियां[1] स्थापित करके अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य से बड़े इलाके में सुसमाचार फैला दिया![2]

उस समय पौलुस को एक विशेष अवसर मिला था कि जिन मण्डलियों की स्थापना पहले हुई थी, उन्हें उत्साहित करे।[3] उदाहरण के लिए, इफिसुस में काम करते समय पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया से मिलने के लिए (1 कुरिन्थियों 5:9[4]) एजियन सागर पार करके (2 कुरिन्थियों 12:14; 13:1[5]) भी उनसे सम्पर्क बनाए रखा।

पौलुस ने केवल इस तथ्य का ही उल्लेख नहीं किया कि एक ''द्वार खुला'' था, बल्कि उसने यह भी ध्यान दिलाया कि ''विरोधी बहुत से'' थे। बाद में, इफिसुस में बिताए अपने दिनों की बात करते हुए पौलुस ने बताया कि ''बड़ी दीनता और आंसू बहा-बहा कर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड्यन्त्र के कारण मुझ पर आ पड़ीं; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा'' (प्रेरितों 20:19)। इसके अलावा, पौलुस ने उस क्लेश के बारे में लिखा ''जो आसिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे'' (2 कुरिन्थियों 1:8)।[6] शायद 2 कुरिन्थियों 11:23-27 में उल्लिखित संकट जैसे कि यहूदियों द्वारा पीटा जाना (आयत 24) और बन्दी बनाया जाना (आयत 23) इफिसुस में ही आये। पौलुस ने ''इफिसुस में वन पशुओं से''[7] (1 कुरिन्थियों 15:32) लड़ाई की बात की और कहा कि अक्विला और प्रिस्किल्ला ने उसके लिए ''अपना ही सिर दे रखा था'' (रोमियों 16:3, 4)।[8] इफिसुस में जब पौलुस के प्राण का ख़तरा था,[9] तो उसके मित्रों ने उसे बचाने के लिए अपने जीवन दांव पर लगा दिए।

लूका ने इन रोमांचकारी घटनाओं को सामान्य वाक्यांश ''ये बातें'' (प्रेरितों 19:21) कहकर संक्षिप्त कर दिया। हो सकता है कि हम पूछना चाहें, ''कौन सी बातें, लूका? हम उनके बारे में सुनना चाहते हैं!'' यदि विवरण चाहिए, तो हमें वे बातें स्वर्ग में जाने पर पौलुस या लूका ही बता पाएंगे!

इफिसुस में कुछ वर्ष के बाद, पौलुस ने फैसला लिया कि वहां उसका काम पूरा हो गया है। सुसमाचार सारे इलाके में फैल चुका था। मज़बूत कलीसियाओं की स्थापना हो चुकी थी। लोगों को शिक्षित किया जा चुका था। इफिसुस में काम को आगे ले जाने के

लिए प्राचीनों की नियुक्ति की जा चुकी थी। इसलिए, पौलुस योजनाएं बनाने लगा: ''जब ये बातें हो चुकीं, तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलेम को जाऊं, और कहा, कि वहां जाने के बाद मुझे रोमा को भी देखना[10] आवश्यक है।'' (आयत 21)। ''आत्मा में ठाना'' का सरल अर्थ यह हो सकता है कि पौलुस ने जो योजनाएं बनाई थीं उनके प्रति वह गम्भीर था, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि योजना बनाने की इस प्रक्रिया में पवित्र आत्मा शामिल था।

19:21 के अनुसार, पौलुस की योजनाओं के तीन पहलू थे: (1) उसने यरूशलेम जाने की योजना बनाई। इस यात्रा का उद्देश्य अन्यजाति मसीहियों से परोपकार की आर्थिक सहायता लेकर यरूशलेम के जरूरतमंद यहूदी मसीहियों तक पहुंचाना था (रोमियों 15:25, 26, 30, 31)। (2) यरूशलेम जाने से पहले, जो कलीसियाएं उसने मकिदुनिया और अखया में स्थापित की थीं, उनसे दोबारा मिलना। पौलुस कलीसियाओं को उत्साहित करने के लिए उनसे मिलने के अलावा,[11] यरूशलेम के लिए परोपकार कोष को पूरा करना चाहता था (1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 8:1-4; 9:1, 2; रोमियों 15:26)। यरूशलेम के लिए विशेष चन्दा लेकर, पौलुस ने सम्भवत: अन्ताकिया में अपनी ''गृह'' मण्डली से फिर मिलना चाहा। फिर (3) उसने रोमी साम्राज्य के केन्द्र रोम जाने की योजना बनाई। यह पहली बार है कि हम यहां पौलुस की रोम जाने की इच्छा के बारे में पढ़ते हैं, यद्यपि उसने कहा कि वह ''बहुत वर्षों से'' (रोमियों 15:23) वहां के भाइयों से मिलना चाह रहा था।[12] स्पष्टत: उसने पश्चिम में सुसमाचार फैलाने के लिए रोम को उसी तरह अपना आधार बनाया, जैसे उसने पूर्व में सुसमाचार फैलाने के लिए अन्ताकिया को बनाया था।[13] प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों 19:21 एक निर्णायक पद है; पुस्तक की तीसरी अन्तिम आयत उन घटनाओं की शृंखला देती है जो रोम में पौलुस के आगमन का आधार बन गई।

मेरा सुझाव था कि मकिदुनिया और अखया में कलीसियाओं को देखने जाने का पौलुस का मुख्य उद्देश्य यरूशलेम के लिए परोपकारी कोष पूरा करना था। कुरिन्थुस से एक शिष्टमण्डल (1 कुरिन्थियों 16:17) मण्डली की ओर से एक पत्र लेकर आया। पत्र (1 कुरिन्थियों 7:1) के साथ संदेशवाहकों की रिपोर्ट (1 कुरिन्थियों 1:11; 5:1) से पता चला कि कलीसिया में शिक्षा सम्बन्धी तथा व्यावहारिक समस्याएं हैं।[14] दुखी होकर (2 कुरिन्थियों 2:4) पौलुस ने सोस्थिनेस नामक[15] अपने एक सहकर्मी से एक पत्र लिखवाया (1 कुरिन्थियों 1:1, 2; 16:8, 9, 21[16]), जिसे हम ''1 कुरिन्थियों'' कहते हैं। पत्र में मण्डली की समस्याओं की बात की गई और निकट भविष्य में व्यक्तिगत रूप से वहां जाने का वायदा किया गया (1 कुरिन्थियों 4:19; 16:3-7)।

पौलुस ने कुरिन्थियों के पास यह पत्र जवान प्रचारक तीमुथियुस के हाथ भेजा (1 कुरिन्थियों 4:17; 16:10)। लूका ने लिखा, कि अब तक, पौलुस ने ''अपनी सेवा करने वालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजा'' (प्रेरितों 19:22क)। सम्भवत: इन दोनों ने कुरिन्थुस में जाने से पहले मकिदुनिया में कुछ शुरुआती तैयारी[17] करनी थी।[18] थोड़ी देर बाद, पौलुस ने कुरिन्थुस में तीमुथियुस के काम को पूरा करने के

लिए एक और जवान प्रचारक तीतुस को भेजा[19] (2 कुरिन्थियों 2:12, 13; 7:5-7; 8:6, 23)। इसी बीच, पौलुस उन खुले द्वारों का जो परमेश्वर ने उसे दिए थे, लाभ लेने के लिए ''आप कुछ दिन आसिया में रह गया'' (आयत 22ख)।

सफल प्रचार तथा अप्रसन्नता (19:23-41)

हम इफिसुस में पौलुस की सेवकाई की एक बड़ी घटना की ओर अर्थात उस अन्तिम घटना की ओर आते हैं जिस कारण पौलुस को जल्दी जाना पड़ा।[20] यह घटना स्पष्ट दर्शाती है कि जब मसीहियत जेब पर प्रहार करती है तो क्या होता है।

''डायना,'' देमेत्रियुस और एक हुल्लड़

आयत 23 कहती है, ''उस समय[21] उस पन्थ के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ।''[22] यह हुल्लड़ देमेत्रियुस[23] नाम के एक सुनार ने करवाया था जो अरतिमिस के चान्दी के मन्दिर बनवाकर (आयत 24) कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था।[24]

KJV की तरह हिन्दी बाइबल में रोमी देवी डायना की जगह यूनानी देवी अरतिमिस का नाम दिया गया है। प्रेरितों के काम में और कहीं दूसरी जगह इसका गलत प्रभाव नहीं जाता (14:12), परन्तु यहां इसका गलत प्रभाव लग सकता है। डायना एक कुंवारी देवी थी, परन्तु इफिसुस दूसरे स्थानों में अरतिमिस देवी को प्राचीन एशिया महाद्वीप को सन्तान देने वाली देवी के रूप में जाना जाता था। इस कारण डायना को तो एक सुन्दर जवान शिकारी के रूप में हिरणों और कुत्तों से घिरे दिखाया जाता है जबकि अरतिमिस को एक मां के रूप में, बहुवक्षीय जीवन देने और उसे बनाए रखने वाली देवी के रूप में दिखाया जाता है।

अरतिमिस को विश्वभर में देवी मां के रूप में पूजा जाता था (आयत 27),[25] परन्तु उसकी पूजा का केन्द्र इफिसुस था। इफिसुस के लोग इस देवी को विलक्षण तौर पर अपनी मानते थे; उसे ''इफिसियों की अरतिमिस'' (आयतें 28, 34) कहते थे। इफिसुस नगर अपने आपको ''बड़ी देवी अरतिमिस के मन्दिर ... का टहलुआ'' (आयत 35) मानता था।

अरतिमिस के मन्दिर के भीतर एक मूर्ति थी, जो दंतकथा के अनुसार आकाश ''से गिरी'' (आयत 35) थी। इस मूर्ति में उल्का पत्थर हो सकता है, जिसे भोले लोग अरतिमिस से मिलता-जुलता समझते थे।[26] संसार का सबसे बड़ा संगमरमर का मन्दिर[27] इफिसुस से थोड़ा बाहर अनगढ़ी चट्टान को रखने के लिए बनाया गया था। यह मन्दिर, जो संसार के सात अजूबों में से एक था, संसार भर के यात्रियों को आकर्षित करता था।

सभी पर्यटकों की तरह, मन्दिर को देखने आने वाले यात्री स्मृति चिह्न खरीद लेते थे। वे आज के पर्यटकों की तरह ईफल टावर या मिचलेंजलो के *डेविड* की मूर्ति लेकर घर नहीं लौटते थे।[28] बल्कि वे छोटी-छोटी मूर्तियां अर्थात ''मॉडल जो अरतिमिस देवी के मन्दिर के जैसे दिखाई देते थे'' (आयत 24; NCV) खरीदकर उन्हें मन्दिर में अर्पित करते थे। मूर्तियों को घर ले जाकर, उनके अन्धविश्वासी मनों को लगता था कि वे अपने घरों में अरतिमिस की उपस्थिति को ले जा रहे हैं।

जैसे कि आप कल्पना कर सकते हैं कि चांदी की ये मूर्तियां बनाना एक लाभकारी व्यवसाय था। लूका ने ध्यान दिया कि यह उद्यम ''[स्थानीय] कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था'' (आयत 24ख)। परन्तु पौलुस के प्रचार से उनकी बिक्री थम सी गई। देमेत्रियुस मूर्तिकार को बड़ा क्रोध आया। उसने इलाके के सुनारों के पास जाकर ''ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठा'' किया (आयत 25क) और उन्हें सावधान किया:

> हे मनुष्यो, तुम जानते हो, कि इस काम में हमें कितना धन मिलता है। और तुम देखते और सुनते हो, कि केवल इफिसुस ही में नहीं बरन प्राय: सारे असिया में[29] यह कह कहकर इस पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी हैं, वे ईश्वर नहीं (आयतें 25ख, 26)।

मूर्तिपूजा के बारे में पौलुस की बातें कोई छुपी हुई नहीं थीं। उसका ऐलान था कि परमेश्वर ''सोने या रुपये या पत्थर के समान [नहीं] है जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों'' (17:29)। उसने लोगों को ''मूरतों से परमेश्वर की ओर'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:9) लाने में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। उसके प्रचार का अपना ही प्रभाव था; उसने अरतिमिस की आराधना करने वाले ''काफी लोगों को समझा कर मोड़ा था''जिससे देमेत्रियुस और मूर्तियां बनाने वालों की कमाई घटने लगी थी कम से कम देमेत्रियुस ने अपने साथी व्यापारियों में यह सही कहा था; उसे अपनी प्रार्थना पुस्तक की इतनी चिन्ता नहीं थी जितनी अपने बुटए की।[30]

परन्तु, वह इतना चालाक था कि वह जानता था कि उसे और दूसरे कलाकारों को होने वाली आर्थिक हानि का वास्ता देकर, वे लोगों को अपने पक्ष में नहीं कर पाएंगे, सो उसने उस पर आरोप लगाने के लिए धार्मिक पूर्वधारणा और राष्ट्रीय गौरव का सहारा लिया:

> और अब केवल इसी एक बात का ही डर नहीं, कि हमारे इस धन्धे की प्रतिष्ठा जाती रहेगी; बरन यह कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा (आयत 27)।

प्रेरितों के काम का यह खण्ड इस बात में असामान्य है कि हमें वहां आत्मा की प्रेरणा विहीन कई लोगों के भाषण मिलते हैं। लूका ने मूर्तिपूजकों को मसीहियत के प्रभाव की गवाही देने की अनुमति दी। देमेत्रियुस के शब्दों से सुन्दर सुसमाचार की गवाही और कहीं नहीं मिल सकती। यदि किसी को लगता है कि देमेत्रियुस ने पौलुस के प्रचार के प्रभाव को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया, तो यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि चालीस वर्षों के बाद एशिया से सम्राट ट्राजन के नाम प्लाइनी[31] ने यह शिकायत करते हुए लिखा कि मसीहियत के कारण देवताओं के मन्दिर खण्डहरों में बदलने लगे थे।

देमेत्रियुस के उत्तेजना भरे शब्दों का वही प्रभाव हुआ, जिसकी अपेक्षा थी। उसके

सुनने वाले ''यह सुनकर क्रोध से भर गए, और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे इफिसियों की अरतिमिस महान है!'' (आयत 28)। वे नारे लगाते हुए ''गली में भागे'' (वैस्टर्न टैक्स्ट)। (भीड़ को उत्तेजित करने वालों को सदा तर्क के स्थान पर सुविधाजनक विकल्प के लिए नारे मिल ही जाते हैं।) प्रदर्शनकारी नगर में घूमते हुए लोगों को अपने साथ मिला रहे थे, जिससे ''सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया'' (आयत 29क)। जब भीड़ काफी बढ़ गई, तो वे ''एकचित होकर रंगशाला में दौड़ गए'' (आयत 29ग) जो कि 25,000 लोगों के बैठने के लिए एक खुला विशाल स्टेडियम था। भीड़ एक जनसमूह बन चुकी थी अर्थात यह प्रदर्शन दंगे का रूप ले चुका था।

कुछ चेले, सन्निकट मृत्यु, और एक ''बचावपक्ष''

सम्भवत: इस आशा में कि भीड़ पौलुस की हत्या कर देगी, उकसाने वालों ने नगर में घूमते हुए पौलुस को मारने की योजना बनाई थी परन्तु प्रेरित उन्हें मिला नहीं। उन्होंने ''गयुस[32] और अरिस्तर्खुस[33] मकिदुनियों को जो पौलुस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया''[34] (आयत 29ख) सो वे उन्हें अखाड़े में खींच लाए। यह दृश्य पागलपन से भरा था; मौत वहां मंडरा रही थी। गयुस और अरिस्तर्खुस का भविष्य धागे से लटका हुआ था।[35]

जब पौलुस को यह ख़बर मिली कि उसके मित्र संकट में हैं, तो सम्भवत: अपने साथियों को छुड़ाने की कीमत पर अपने आपको देने के लिए वह उस रंगमंच की ओर चला गया। परन्तु, ''जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने न दिया'' (आयत 30)। उन्हें मालूम था कि भीड़ को समझाने का कोई लाभ नहीं, और यदि पौलुस उनसे छिन जाता तो प्रभु का कार्य प्रभावित हो सकता था (देखिए 2 शमूएल 21:17)।

लूका ने यह टिप्पणी जोड़ी कि ''आसिया के हाकिमों में से भी उसके [पौलुस के] कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा, और बिनती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना'' (आयत 31)। *बैगस्टर्ज़ अनैलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* के अनुसार यह आसिया के हाकिम थे ''जिन्हें धार्मिक आराधना से जुड़ी बातों की प्रधानगी और देवताओं के सम्मान में वार्षिक सार्वजनिक खेलें अपने खर्च पर कराने के लिए धनवान नागरिकों में से चुना जाता'' था। उनके पद से नहीं लगता कि ये लोग मसीही बने होंगे, परन्तु कम से कम वे पौलुस और उस काम के प्रति जिसका वह अंगीकार करता था, सहानुभूति रखते थे।[36] वाक्यांश ''उसके पास कहला भेजा'' से पता चलता है कि पौलुस को रोक कर रखना कितना कठिन था।

उसी समय, रंगमंच पर, ''कोई कुछ चिल्लाया, और कोई कुछ; क्योंकि सभा[37] में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिए इकट्ठे हुए हैं'' (आयत 32)।[38] यह उत्तेजित भीड़ का उत्कृष्ट दृश्य था। एक अमेरिकन राजनेता और लेखक बैंजमिन फ्रैंकलिन ने भीड़ की परिभाषा इस प्रकार दी ''लोगों का एक ऐसा समूह जिसमें सिर तो बहुत से हैं परन्तु दिमाग़ एक भी नहीं।''

यह समझाने के लिए कि वह भीड़ कितनी उलझन में थी, लूका ने कहा, ''उन्होंने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया'' (आयत 33क)। यहूदी लोग उन्मादी मूर्तिपूजकों के साथ क्या कर रहे थे? यह सिकन्दर कौन था जिसे उन्होंने खड़ा किया था? पौलुस ने बाद में एक ''सिकन्दर ठठेरे'' का नाम लिया जिसने उसकी ''बहुत बुराइयां की'' (2 तीमुथियुस 4:14; 1 तीमुथियुस 1:20 भी देखिए)। क्या यह वही आदमी हो सकता है?[39] उन्होंने भीड़ के आगे सिकन्दर को (चाहे वह कोई भी था) क्यों खड़ा किया? क्या वे सिकन्दर के माध्यम से यह स्पष्ट करवाना चाहते थे कि इफिसुस के यहूदी ऐसी किसी समस्या के लिए ज़िम्मेदार नहीं थे जो पौलुस के कारण आयी हो?[40] सिकन्दर का इशारा कुछ भी हो, भीड़ को यह स्पष्ट नहीं था। शायद कइयों ने यह निष्कर्ष निकाला होगा कि सिकन्दर ने ही वह सभा बुलाई है; दूसरों ने सोचा होगा कि मुकदमा उसी पर चल रहा है।

सिकन्दर को मंच क्षेत्र में बैठने के स्थान के नीचे ''खड़ा किया'' गया होगा। वह लोगों को चुप कराने के लिए ''हाथ से इशारा करके लोगों के साम्हने उत्तर देना चाहता था'' (आयत 33ख) परन्तु उसे कोई अवसर नहीं मिला था। ''परन्तु जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है,[41] तो सब के सब एक शब्द से कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे, कि इफिसियों की अरतिमिस महान है!'' (आयत 34)।

भीड़ की रुचि केवल अरतिमिस के अस्तित्व को लेकर नहीं थी। यदि उत्तेजित भीड़ को यह समझ होती कि मन्दिर को ख़तरा है, तो उन्हें स्वाभाविक ही समझ आ जानी थी कि उनकी आर्थिकता को ख़तरा था। जब कोई बड़ा उद्योग बन्द होता है, तो इससे क्षेत्र का हर व्यक्ति प्रभावित होता है। शायद वे भी चिल्लाए क्योंकि उन्हें बटुए हल्के होते लग रहे थे।

मैंने उन 25,000 मूर्च्छित इफिसियों के चीत्कार करने के दो घण्टों की कल्पना करने की कोशिश की है! सबसे अच्छे उदाहरण के लिए मुझे रात का वह समय याद आता है जब मेरे पड़ोसियों के सभी कुत्तों ने एक साथ भौंकने का फैसला किया। उसके कुछ मिनटों के बाद, मुझे लगा कि मैं अपने बाल नोच रहा हूं!

गड़बड़, ख़तरा, और एक निष्कासन

नगर के मुख्यालय रंगमंच से कुछ दूरी पर थे।[42] नगर अधिकारियों को स्टेडियम में हुए दंगे का पता होना चाहिए था। परन्तु जब तक दो घण्टे के बाद भीड़ स्वयं ही थक कर पागलों जैसे चीत्कार न करने लगी तब तक इस पर काबू पाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। तब नगर के मन्त्री ने हस्तक्षेप करके लोगों को शांत होने के लिए कहा (आयत 35) यूनानी शब्द का अनुवाद ''नगर का मन्त्री''[43] ''ग्रंथी'' के लिए सामान्य शब्द है और इस तथ्य का भी संकेत देता है कि नगर का यह मन्त्री नगर के कामकाज का हिसाब रखता था। परन्तु, इफिसुस में उसका महत्व एक सचिव से कहीं अधिक बढ़कर था। NIV स्टडी बाइबल में लूईस फोस्टर के अनुसार वह ''अति महत्वपूर्ण स्थानीय अधिकारी [''मेयर'';

द लिविंग बाइबल] और सभा का मुख्य कार्यकारी अधिकारी था, जो इफिसुस तथा रोमी अधिकारियों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता था।''

जिस प्रकार दंगा भड़काने में देमेत्रियुस कामयाब रहा था, वैसे ही इस अधिकारी ने भी दंगा शांत करने के लिए अपनी योग्यता को प्रमाणित कर दिया। वह रंगमंच में लोगों को आश्वासन देते हुए कहने लगा कि ''हे इफिसियो, कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का नगर, बड़ी देवी अरतिमिस के मन्दिर, और ज्यूस की ओर से गिरी हुई मूरत का टहलुआ है''[44] (आयत 35)। फिर उसने उन्हें सावधान किया: ''सो जब कि इन बातों का खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उचित है, कि तुम चुप रहो; और बिना सोचे विचारे कुछ न करो'' (आयत 36)। द NCV में है, ''रुक जाओ और कुछ करने से पहले सोच लो।''

दो घण्टे के शोर के दौरान इस अधिकारी ने अपनी खोज पूरी कर तथ्य इकट्ठे कर लिए थे। उसने ऐलान करते हुए गयुस और अरिस्तर्खुस की ओर इशारा किया, ''क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो, जो न मन्दिर के लूटने वाले हैं, और न हमारी देवी के निन्दक हैं'' (आयत 37)। क्या नगर के मन्त्री ने यह कहकर झूठ बोला था कि इन दो मसीहियों ने अरतिमिस की निन्दा नहीं की थी (अर्थात, उसके विरुद्ध नहीं बोला था)? सम्भव है। याद रखें (1) कि यह अधिकारी उलझन में पड़े लोगों से बात कर रहा था, जिनमें से बहुतों को यह पता नहीं था कि वहां क्या हो रहा है (आयत 32); (2) कि उसका उद्देश्य इन दोनों का बचाव नहीं, बल्कि कानून व्यवस्था को बहाल करना था; और (3) कि, वह मसीही नहीं था, इसलिए हो सकता है कि यदि झूठ बोलने से उसका काम चल जाता तो वह झूठ भी बोल देता। दूसरी ओर हो सकता है देमेत्रियुस और दूसरे मूर्तिकारों ने उसको चेतावनी दी हो कि वह सज्जाई को बहुत लम्बा न खींचे। इसलिए, उसने कुछ वाला नहीं कहा। पौलुस और उसके सहकर्मियों ने यह प्रचार तो किया था कि ''जो हाथ की कारीगरी हैं, वे ईश्वर नहीं'' (आयत 26क), परन्तु उन्होंने सम्भवत: अरतिमिस पर व्यक्तिगत प्रहार नहीं किया था। उन्होंने मूर्तिपूजा विरोधी रैलियां नहीं निकाली थीं। उन्होंने मन्दिर पर धरना नहीं दिया था; उन्होंने तो ''केवल'' सुसमाचार का प्रचार किया था।

यदि देमेत्रियुस और अन्य कलाकार विरोध के लिए लालायित थे, तो इस अधिकारी ने बड़े प्रभावशाली ढंग से उन्हें गड़बड़ी फैलाने वाले दुष्कर्मी कहकर शांत कर दिया:

> यदि देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी से विवाद हो तो कचहरी खुली है,[45] और हाकिम[46] भी हैं; वे एक दूसरे पर नालिश करें। परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा[47] (आयतें 38, 39)।

इन शब्दों से इस अधिकारी ने दो उद्देश्यों को पूरा किया। पहले, उसने ज़ोर दिया कि शिकायतों को निपटाने के लिए सही और गलत ढंग में से उन्होंने गलत को चुना था। उसने कारीगरों को बता दिया कि यदि उसका कोई अप्रत्यक्ष नकारात्मक प्रभाव हुआ तो

कौन ज़िम्मेदार होगा।

फिर इस अधिकारी ने सम्भावित परिणामों की ओर इशारा किया: ''क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिए कि इसका कोई कारण नहीं; सो हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे'' (आयत 40)। इन शब्दों के महत्व को समझने के लिए दंगों के प्रति हमारे लिए रोम के व्यवहार को समझना आवश्यक है। रोम की दृष्टि में, कुछ अपराध सरकारी आदेशों का पालन न करने से भी बड़े थे (दंगा भड़काने का अपराध मृत्यु दण्ड के योग्य था)। इफिसुस एक स्वतन्त्र नगर था और उसे बहुत से विशेषाधिकार प्राप्त थे। यदि रंगमंच में गड़बड़ी की बात रोम में पहुंच जाती तो इसके सभी नहीं तो अधिकतर अधिकार छिन सकते थे। रोमी सैनिक शहर पर कब्जा कर सकते थे। आरोपियों को (ऐसी सजा के लिए नगर मन्त्री भी इनमें शामिल था) कैद और मौत की सज़ा तक मिल सकती थी! कम से कम, जुर्माने तो लग ही जाते, टैक्स बढ़ जाते, और श्रम जीवियों के संघ भंग कर दिए जाते। अन्य शब्दों में सुनार और दूसरे मूर्तिकार दंगा भड़काकर जिस बटुए को हल्का होने से बचाने का यत्न कर रहे थे, उसी पर प्रहार हो जाता।

अधिकारी ने अपनी बात पूरी करने के बाद देखा कि कुछ समय पहले भड़की हुई भीड़ अब शांत थी। लूका ने लिखा कि ''यह कहके उसने सभा को विदा किया'' (आयत 41)। मैं लोगों को मंच से बाहर शांत और सिर झुकाए घर की ओर जाते हुए देख सकता हूं। मैं नगर अधिकारी को भी भौंहें साफ़ करके दूसरे सांसारिक मामलों को निपटाने के लिए नगर कार्यालय में जाते देख सकता हूं। मैं कल्पना करता हूं कि उसने सोचा, ''यह तो अच्छा है कि मुझे *ऐसा* हर रोज़ नहीं करना पड़ता!'' और शायद, ''इतना तो कोई वेतन भी नहीं देता जितना मैं काम करता हूं!''

पौलुस के सहकर्मियों, गयुस और अरिस्तर्खुस का क्या हुआ जिन्हें रंगशाला में घसीटकर लाया गया था? शायद उन्हें अधिकारी ने क्षमा मांगने पर छोड़ दिया, क्योंकि अगले अध्याय में हम उन्हें फिर से पौलुस के साथ घूमते हुए देखते हैं[48] (20:3, 4)।

प्रभु के मार्ग की यह एक और विजय थी। एक बार फिर विश्वासियों को निर्दोष ठहराया गया था और उनके सताने वाले दोषी ठहरे थे। लूका ने अपने पाठकों को दिखा दिया था कि यह दंगा मसीहियों के कारण नहीं, बल्कि उनके सताने वालों के कारण हुआ था, जो समाज के लिए एक ख़तरा थे।

सारांश

रंगशाला में भड़के दंगे से पौलुस समझ गया कि उसकी योजना के अनुरूप इफिसुस को छोड़ने का समय आ गया था। खुले द्वार (1 कुरिन्थियों 16:9) धम से बन्द हो चुके थे। इस कारण, ''जब हुल्लड़ थम गया, तो पौलुस ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और उन से विदा होकर मकिदुनिया की ओर चल दिया'' (20:1)।

इफिसुस के दंगे के नाटकीय ढंग से वर्णन में हमारे लिए बहुत सी शिक्षाएं हैं। इससे

क्रूस शत्रुओं द्वारा भी सुसमाचार की सामर्थ को मानने का पता चलता है। जैसा कि देमेत्रियुस ने सही निष्कर्ष निकाला था कि सुसमाचार के कारण अरतिमिस देवी की उपासना खतरे में पड़ गई थी। किसी ज़माने का भव्य अरतिमिस का मन्दिर आज खण्डहरों का ढेर है। वहां केवल एक ही खम्भा स्थिर है; उस पर भी क्रौंच पक्षी का घोंसला है।

परन्तु, हमारे युग के लिए विशेष महत्व समय पर दी गई चेतावनी है कि धन के विषय में ज्यादा चिन्ता न की जाए। धन या हथियार मूर्ति भी हो सकता है। हम परमेश्वर की आराधना करके धन को उसके कार्य को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं, या धन की उपासना करके और धन कमाने के लिए धर्म का इस्तेमाल कर सकते हैं। कुछ पल के लिए पीछे बैठ जाएं और सर्वशक्तिमान धन के बारे में देमेत्रियुस और उसके मित्रों की उत्सुकता को देखें; फिर आईने में अपने आपको देखें। धन के प्रति हमारा क्या व्यवहार है? जब मसीह के काम को फैलाने या दूसरों की सहायता के लिए हमें अवसर मिलते हैं तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? (यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि आपका व्यवहार कैसा होना चाहिए, तो उदारता से दान दीजिए और देखें कि आपको कैसा लगता है!) मेरी प्रार्थना है कि मसीहियत हमारे बटुओं पर प्रहार करके हमें मुस्कुराहट दे, दु:ख नहीं।

प्रवचन नोट्स

रॉबर्ट के पास नगर अधिकारी के भाषण की एक दिलचस्प प्रासंगिकता है। उसने इस भाषण का नाम ''पूर्वधारणा से कैसे निपटें'' रखा है और शिक्षा देते समय हमारे सामने आने वाली पूर्वधारणा से निपटने के साथ प्रासंगिकता बताता है।

पाद टिप्पणियां

[1]इफिसुस की मण्डली के अलावा, एशिया की सात कलीसियाओं की सभी नहीं तो अधिकतर मंडलियां (प्रकाशितवाक्य 1-3) इसी समय स्थापित हुई थीं, जिसमें कुलुस्से और हियरापुलिस की मण्डलियां भी शामिल थी।[2]इस तुलना में उस क्षेत्र का नाम देना चाहिए जिसे सुनने वाले जानते हैं। याद रहे कि एशिया में रोमी राज्य पश्चिमी तट तक था जिसे आज तुर्की कहा जाता है। पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिये। [3]दूसरा कुरिन्थियों 11:28 इन मंडलियों के लिए पौलुस की चिन्ता बताता है। कोई संदेह नहीं कि उसने कुरिन्थुस की कलीसिया की तरह इनको उत्साहित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। [4]कई लोगों का मानना है कि 1 कुरिन्थियों 5:9 में जिस पत्री की बात (जो 1 कुरिन्थियों से पहले की है) है उसे 2 कुरिन्थियों के भाग के रूप में रखा गया है। परन्तु, इस बात की अधिक सम्भावना है कि पहले पत्र में कही गई हर बात 1 कुरिन्थियों में दोहराई गई और विस्तार से बताई गई और परमेश्वर को लगा कि इसे हमारे लिए रखना आवश्यक नहीं है। [5]ये दो हवाले *तीसरी* बार जाने का उल्लेख करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि दूसरी यात्रा के अन्त में कुरिन्थुस से जाने और तीसरी यात्रा के अन्त में उनसे मिलने के बीच वह दूसरी बार भी उनसे मिला था। यह जाना तभी हुआ होगा जब पौलुस इफिसुस में रह कर काम कर रहा था। [6]पौलुस के दिमाग में कोई गम्भीर बीमारी होगी। [7]जंगली जानवरों जैसा व्यवहार करने वाले लोगों के लिए ''वन पशुओं'' वाक्यांश का इस्तेमाल सम्भवत: एक अलंकार है। कानूनी तौर पर रोमी नागरिक होने के कारण, पौलुस को वन पशुओं के साथ लड़ने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता था। [8]रोमियों के नाम पुस्तक लिखने के समय, पौलुस कुरिन्थुस तथा इफिसुस दो नगरों में अक्विला और प्रिस्किल्ला के साथ काम करता था। ऐसा कोई संकेत

नहीं है कि कुरिन्थुस में अक्विला और प्रिस्किल्ला को उसके लिए अपने प्राण जोखिम में डालने पड़े हों, यह घटना सम्भवत: इफिसुस में घटी। [9]बहुत से लोगों का मानना है कि थियेटर में भीड़ का दृश्य (19:23-41) ही वह दृश्य है जिसे पौलुस ने ''वन पशुओं से लड़ना'' कहा, परन्तु थियेटर की घटनाओं से पहले ही 1 कुरिन्थियों लगभग लिखी जा चुकी थी। इसके अलावा, दंगे के दौरान पौलुस रंगशाला में नहीं गया (पद 30, 31), सो वह किसी के साथ ''लड़ा'' नहीं। यह अधिक सम्भव लगता है कि कोई अन्य घटना थी जिसके विषय में लूका ने बताया नहीं। [10]''आवश्यक है'' शब्द से पता चलता है कि पौलुस इन योजनाओं के प्रति कितना गम्भीर था; उसने इसका विकल्प ढूंढ़ने की कोशिश नहीं की।

[11]पौलुस की आदत थी कि जिन मंडलियों को उसने स्थापित किया होता था उनसे दोबारा मिलने वह अवश्य जाता था (14:22, 23; 15:36, 41; 18:23)। जहां तक हमें मालूम है, अभी तक कुरिन्थुस को छोड़कर, वह दूसरी मिशनरी यात्रा में स्थापित हुई कलीसियों से मिलने नहीं गया था। [12]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में ''परमेश्वर की पुकार का उत्तर देना'' पाठ में प्रेरितों 16:12 पर नोट्स और इस भाग में ''भले मनों की तलाश'' पाठ में पाद टिप्पणी 28 देखिये। [13]पौलुस को उम्मीद थी कि परमेश्वर के उद्देश्यों को रोम में पूरा करके वह रोमी राज्य के दूर पश्चिमी इलाकों अर्थात स्पेन में जाएगा (रोमियो 15:22-24)। (रोम जाने का पौलुस के पास एक और कारण था कि वह वहां के मसीहियों को दृढ़ करना चाहता था [रोमियों 1:11]।) [14]यह भी सम्भव है कि संदेशवाहकों का आना, पत्र का पहुंचना और ''खलोए के घराने'' से रिपोर्ट मिलना तीन अलग-अलग घटनाएं हों। सबसे आसान दृश्य यह है कि खलोए (वह जो भी थी) ने संदेशवाहकों को भेजा जो कलीसिया से पत्र लेकर आए। [15]हम कुरिन्थुस के आराधनालय के शासक सोस्थिनेस नामक एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं (18:17)। इन दोनों सोस्थिनेसों के बीच कोई सम्बन्ध है या नहीं हम नहीं जानते। ''प्रभु अपना वचन सदैव निभाता है'' पाठ में पाद टिप्पणी 21 देखिये। [16]पहला कुरिन्थियों 16:21 में संकेत मिलता है कि पौलुस ने पत्र का अधिकतर भाग अपने हाथ से नहीं लिखा। पौलुस द्वारा पत्र के आरम्भ में साथी लेखक का नाम डालने (उदाहरण के लिए 1 कुरिन्थियों 1:1, 2) से सामान्यतया संकेत मिलता है कि उसने उस व्यक्ति से बोल कर पत्र लिखवाया। [17]सम्भव है कि इरास्तुस रोमियों 16:23 में उल्लिखित कुरिन्थुस ''नगर का भण्डारी'' था (2 तीमुथियुस 4:20)। यदि ऐसा था, तो इससे स्पष्ट हो जाएगा कि पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीहियों को क्यों नहीं बताया कि उसने इरास्तुस को भेज दिया था; अर्थात, यह कि वह ''घर चला गया था।'' [18]सम्भवत: उन्होंने पौलुस के जाने और यरूशलेम के लिए चंदा इकट्ठा करने के काम के लिए तैयारी करनी थी। [19]घटनाएं और भी हुई हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने तीमुथियुस को पत्र लिखकर कुरिन्थुस लौट आने के लिए कहा हो सकता है। फिर पौलुस ने तीमुथियुस को आरम्भ किए अपने काम को देखने भेजा हो सकता है और बाद में, तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में अलग-अलग भेजा हो सकता है। (जैसे कि पहले कहा गया है, लूका ने किसी कारण से प्रेरितों के काम में तीतुस का बिल्कुल उल्लेख नहीं किया। हमें उसके कामों के बारे में अन्य स्रोतों से पता लगाना पड़ेगा।) [20]पौलुस ने इफिसुस से जाने का निर्णय पहले ही ले तो लिया था, परन्तु उसने सम्भवत: जाने से पहले कुरिन्थियों के बारे में तीतुस से सुनने के लिए रुकने की योजना बनाई (2 कुरिन्थियों 2:12, 13)। दंगे के कारण उसके लिए एकदम जाना आवश्यक हो गया।

[21]कई लोगों का अनुमान है कि यह गड़बड़ी अरतिमिस के वार्षिक उत्सव के दौरान हुई, जो पिन्तेकुस्त के समय ही होता था (देखिए 1 कुरिन्थियों 16:8, 9)। [22]मसीहियत के लिए ''पंथ'' लूका का पसन्दीदा शब्द था (9:2; 19:9, 23; 24:4; 24:14, 22)। [23]3 यूहन्ना 12 में एक और देमेत्रियुस का उल्लेख है; लगता नहीं कि ये दोनों नाम एक ही व्यक्ति के हों। [24]अरतिमिस के चांदी के मन्दिर तो नहीं मिले परन्तु, पक्की मिट्टी के मन्दिर अवश्य मिले हैं। मैं कल्पना करता हूं कि चांदी के मन्दिर पिघल गए और जब लोगों ने अरतिमिस की उपासना करनी बन्द कर दी तो लोग चांदी को उतार कर ले गए। [25]तीस से अधिक स्थानों की खोज की गई है जहां पर अरतिमिस की उपासना होती थी। तुर्की में सारदीस के खण्डहरों में जाकर, मैंने अरतिमिस को समर्पित विशाल मन्दिर के खण्डहर देखे हैं। [26]यह भी सम्भव है कि किसी रचनात्मक

कलाकार ने समरूपता को और बढ़ाने के लिए कार्य किया हो। [27]यह पारथिनोन से चार गुना बड़ा था। [28]किसी ऐसी स्मारिका के बारे में बताया जा सकता है जिससे सुनने वाले परिचित हों। [29]यह एशिया का महाद्वीप नहीं बल्कि एशिया का रोमी इलाका था। [30]देमेत्रियुस की घबराहट को दिखाने के लिए कोई स्थानीय उदाहरण दिया जा सकता है। अमेरिका और अन्य देशों में जहां बहुत से व्यापारी साल भर के लाभ के लिए बड़े दिन (क्रिसमस) की खरीदारी पर निर्भर करते हैं, आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि लोग क्रिसमस को मनाना बन्द कर दें तो उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी।

[31]छोटा प्लाइनी (लगभग 61-112 ई.) एक रोमी सिनेटर था जिसने 100 ई. वर्ष में रोमी अधिकारी के रूप में कार्य किया। बाद में, बितुनिया के राज्यपाल के रूप में उसने राज्य के भीतर मसीहियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार जैसे प्रश्नों पर सम्राट ट्राजन के साथ पत्र व्यवहार किया। [32]हम पक्का नहीं कह सकते कि ''मकिदुनिया से'' यह गयुस कौन था। नये नियम में कई गयुसों का उल्लेख है (प्रेरितों 20:4; रोमियों 16:23; 1 कुरिन्थियों 1:14; 3 यूहन्ना 1)। कई लोगों का मानना है कि प्रेरितों 20:4 में उल्लेखित गयुस 19:29 वाला गयुस ही है; वैस्टर्न टैक्सट में संकेत दिया गया है कि प्रेरितों 20:4 वाला गयुस दिरबे के बजाय दोबिरुस (मकिदुनिया का एक नगर) से था। [33]अरिस्तर्खुस मकिदुनिया की राजधानी थिस्सलुनीके में रहने वाला था (प्रेरितों 20:4)। वह पौलुस के साथ यरूशलेम में और फिर रोम में गया (प्रेरितों 27:2)। रोम से लिखते हुए पौलुस ने अरिस्तर्खुस को अपने ''साथ कैदी'' बताया (कुलुस्सियों 4:10; फिलेमोन 24 भी देखिए)। [34]पता नहीं कि 19:29 के हवाले से पहले ये दो लोग ''पौलुस के संगी यात्री'' कब, कहां या क्यों थे। [35]अमेरिका में, जोड़ा जा सकता है कि बीमा विक्रेता ने उन्हें ''तुच्छ जोखिम'' कहा होगा। [36]यह तथ्य कि उच्च पदों पर बैठे ये अधिकारी मसीहियत के प्रति सहानुभूति रखते थे लूका द्वारा प्रस्तुत एक और प्रमाण है कि मसीहियत को समाज से किसी प्रकार का ख़तरा नहीं था। [37]इस आयत में, ''सभा'' शब्द *इकलिसिया* का अनुवाद है, जिसका आम तौर पर ''कलीसिया'' के लिए अनुवाद किया जाता है। 32, 39 और 41 आयतों में *इकलिसिया* का इस्तेमाल सभा के गैर धार्मिक अर्थ में किया जाता है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 197 पर शब्दावली में देखिए ''कलीसिया।'' [38]नये नियम की मसीहियत का अधिकतर विरोध अज्ञानता के कारण है। [39]यह मानते हुए कि 2 तीमुथियुस 4:14 वाला सिकन्दर वही सिकन्दर है जो 1 तीमुथियुस 1:20 में है, जिस सिकन्दर की पौलुस ने बात की वह मसीही बन गया था, परन्तु फिर गिर गया। पौलुस के 1 तीमुथियुस (1:3) लिखने के समय तीमुथियुस इफिसुस में नहीं था, यह सिकन्दर इफिसुस का रहने वाला हो सकता है। यह तथ्य कि लूका द्वारा नाम लेकर उसके उल्लेख से संकेत मिल सकता है कि पाठकों को पता होगा कि वह कौन था। [40]स्पष्टत: मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में इफिसुस के यहूदियों की नीति ''जीओ और जीने दो'' की थी जिसे परमेश्वर कभी भी अपनी स्वीकृति नहीं देता था।

[41]जोसेफस के अनुसार, इफिसुस के लोग यहूदियों को तुच्छ समझते थे। उन्होंने सम्भवत: सिकन्दर को उसके पहरावे और/या कपड़ों से पहचान लिया होगा कि वह एक यहूदी है। [42]मैं मान लेता हूं कि इफिसुस में जिस यात्री दल के साथ मैं था उसका गाइड सही स्थानों के बारे में बता रहा था। [43]एक बार फिर, पुरातत्व विज्ञानी पुष्टि करते हैं कि लूका ने बिल्कुल सही शब्द का इस्तेमाल किया। [44]''मूरत का टहलुआ'' उस एक यूनानी शब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ ''मन्दिर की सफाई करने वाला'' (अर्थात, जो मन्दिर की सम्भाल करता है)। नगरों में ''मन्दिर की सम्भाल करने वाले'' लोग रखने में मुकाबला होता था। [45]यह स्थानीय सभा को कहा गया है जो लगातार इकट्ठी होती थी। [46]यह क्षेत्रीय अधिकारी को कहा गया है। सारे एशिया पर आम तौर पर केवल एक ही हाकिम होता था, इसलिए इस शब्द का बहुवचन रूप कुछ रहस्यमयी है। शायद इस शब्द का इस्तेमाल क्षेत्रीय अधिकारियों के लिए अधिक सामान्य अर्थ में किया गया है। कई लोगों का मानना है कि यह अशांति के समय की बात है जब किसी क्षेत्र पर एक से अधिक लोग हाकिम होने का दावा करते थे। [47]यह ''नियत सभा'' ''नगर के लोगों के लगातार मिलने'' को कहा गया था (NCV)। [48]इस वाक्य में, मैं यह मान रहा हूं कि दोनों गयुस एक ही हैं, बेशक लूका ने उन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों से बताया।